गणेश आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी।
माथे पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

अंधों को आंखें देना,
बंजर को पुत्र देना, गरीबों को प्रेम देना।
'सुर' श्याम शरण में आए और
माता पार्वती और पिता महादेव की सेवा करने में सफल हुए।

दीनन की लाज राखो, शम्भु सुतवारी
कामना को पूर्ण करो, जग बलिहारी॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

Ganesh Ji Ki Aarti PDF – आरती विधि
आरती आरम्भ करने से पूर्व 3 बार शंख बजाएं। शंख को धीमे स्वर से उच्च स्वर की ओर बजाएं ।
तदोपरान्त आरती आरम्भ करें।
आरती के समय एक लय में घण्टी बजाएं और लय का ध्यान रखते हुए आरती गाएं।
आरती गाते समय शब्दों का शुद्ध उच्चारण करें।
आरती के लिए शुद्ध कपास अथार्त रूई से बनी घी की बत्ती का प्रयोग करें ।
घी या बत्ती उपलब्ध न होने पर कपूर से भी आरती की जाती है।
बत्तियोंं की संख्या एक, पांच, नौ, ग्यारह या इक्किस रखनी चाहिए।
आरती संपन्न होने पर जयकारा लगते हुए श्री गणेश जी से मंगलकामना करें।